इस बार "तिवारी" पीटे गये गौ रक्षकों के हाथों... लगेगी आग तो आयेंगे घर कई ज़द में ...

देवास निवासी प्रवीण तिवारी जयपुर के चौमू से अपने डेरी व्यवसाय के लिए जर्सी गाय खरीदकर ट्रक से देवास ले जा रहे थे. उनको कोटा की सीमा में स्थित हैंगिग ब्रिज टोल नाके पर पांच से छह लोगों ने रुकवाया और गो तस्करी का आरोप लगाकर पीटना शुरू कर दिया.

उनके 8000 रुपये छीन लिए। गौरक्षक उसके बाद भी तमाम लोगों को बुलाते रहे और लोग प्रवीण तिवारी को पीटते रहे। बाद में पुलिस पहुंची और तिवारी को मुक्त कराया। पुलिस ने इस मामले में अज्ञात लोगों पर मुकदमा दर्ज किया है।

क्या लगता है भक्तों ? नरेंद्र मोदी ने जो जॉम्बी तैयार किए हैं, सड़कों पर लोगों का खून पीने के लिए, उसके शिकार सिर्फ मीयां/मुस्लिम होंगे ?

जनाब राहत इंदौरी साहब के कलम से हालाते-बयां-
अगर ख़िलाफ़ हैं होने दो जान थोड़ी है
ये सब धुआँ है कोई आसमान थोड़ी है
लगेगी आग तो आएँगे घर कई ज़द में
यहाँ पे सिर्फ़ हमारा मकान थोड़ी है
मैं जानता हूँ के दुश्मन भी कम नहीं लेकिन
हमारी तरहा हथेली पे जान थोड़ी है
हमारे मुँह से जो निकले वही सदाक़त है
हमारे मुँह में तुम्हारी ज़ुबान थोड़ी है
जो आज साहिबे मसनद हैं कल नहीं होंगे
किराएदार हैं ज़ाती मकान थोड़ी है
सभी का खून है शामिल यहाँ की मिट्टी में
किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है

- साभार

चंगेज़ खान बौद्ध लड़ाका था

चंगेज़ या चिंगीस-अर्थात "सागर" अतएव लम्बाचौड़ा, भीमकाय, महाशक्तिशाली !

13वीं सदी में हुए एक दुर्धर्ष लड़ाका। खूनखच्चर से क़तई कोई गुरेज़ नहीं था। ईरान देश में क़त्लेआम किया था, उज़्बेकिस्तान/ताजिकिस्तान के बुख़ारा और समरकन्द जैसे नगरों का नाश करने वाले, चीन में तबाही लाया था, तिब्बत और बर्मा के इलाक़ों में भी।

ये ग़लत है कि चंगेज़ एक मुसलमान थे। तेमुजिन नाम का वह लड़का असल में बौद्ध मतावलम्बी था।

"ख़ान" शब्द मंगोलों की परम्परा के "कागान" से आया। कागान (अर्थात चक्रवर्ती सम्राट सरदार) एक उपाधि हुआ करती जो मंगोल लड़ाके सभा करके अपने चुने हुए सरदार को दे देते थे।

चंगेज़ या चिंगीस भी इसी तरह एक दिया हुआ नाम है। या पड़ गया नाम ! अनेक छोटे बड़े क़बीलों में बंटे हुए कुल लोक में जब किसी एक क़बीले का लड़का सरदार आसपास के क़बीलों को दबा ले तो कहते कि इसने तो दुनिया ही अपने भीतर समो ली, कि ये तो दुनिया का समन्दर (चंगेज़) हो लिया !

चंगेज़ के साथ ख़ान भी जुड़ गया तो उसका मत्लब हो गया जगत्सम्राट, दुनिया भर का महाराजा !

अपनी पहुँच की दुनिया में मुसलमानों के लिए वह मौत और दहशत का दूसरा नाम बनकर उभरा था।

एक बार फिर, चंगेज़ ख़ान साहब मुस्लमान नहीं थे।

- साभार

उत्तराधिकारी

प्राचीनकाल के एक गुरु अपने आश्रम को लेकर बहुत चिंतित थे। गुरु वृद्ध हो चले थे और अब शेष जीवन हिमालय में ही बिताना चाहते थे, लेकिन उन्हें यह चिंता सताए जा रही थी कि मेरी जगह कौन योग्य उत्तराधिकारी हो, जो आश्रम को ठीक तरह से संचालित कर सके।

उस आश्रम में दो योग्य शिष्य थे और दोनों ही गुरु को प्रिय थे। दोनों को गुरु ने बुलाया और कहा- शिष्यों मैं तीर्थ पर जा रहा हूँ और गुरुदक्षिणा के रूप में तुमसे बस इतना ही माँगता हूँ कि यह दो मुट्ठी गेहूँ है। एक-एक मुट्ठी तुम दोनों अपने पास संभालकर रखो और जब मैं आऊँ तो मुझे यह दो मुट्ठी गेहूँ वापस करना है। जो शिष्य मुझे अपने गेहूँ सुरक्षित वापस कर देगा, मैं उसे ही इस गुरुकुल का गुरु नियुक्त करूँगा। एक शिष्य गुरु को भगवान मानता था। उसने तो गुरु के दिए हुए एक मुट्ठी गेहूँ को पुट्टल बाँधकर एक आलिए में सुरक्षित रख दिए और रोज उसकी पूजा करने लगा। दूसरा शिष्य जो गुरु को ज्ञान का देवता मानता था उसने उन एक मुट्ठी गेहूँ को ले जाकर गुरुकुल के पीछे खेत में बो दिए।

कुछ महीनों बाद जब गुरु आए तो उन्होंने जो शिष्य गुरु को भगवान मानता था उससे अपने एक मुट्ठी गेहूँ माँगे। उस शिष्य ने गुरु को ले जाकर आलिए में रखी गेहूँ की पुट्टल बताई जिसकी वह रोज पूजा करता था। गुरु ने देखा कि उस पुट्टल के गेहूँ सड़ चुके हैं और अब वे किसी काम के नहीं रहे। तब गुरु ने उस शिष्य को जो गुरु को ज्ञान का देवता मानता था उससे अपने गेहूँ दिखाने के लिए कहा। उसने गुरु को आश्रम के पीछे ले जाकर कहा- गुरुदेव यह लहलहाती जो फसल देख रहे हैं यही आपके एक मुट्ठी गेहूँ हैं और मुझे क्षमा करें कि जो गेहूँ आप दे गए थे वही गेहूँ मैं दे नहीं सकता।

लहलहाती फसल को देखकर गुरु का चित्त प्रसन्न हो गया और उन्होंने कहा जो शिष्य गुरु के ज्ञान को फैलाता है, बाँटता है वही श्रेष्ठ उत्तराधिकारी होने का पात्र है। मूलत: गुरु के प्रति सच्ची दक्षिणा यही है। सामान्य अर्थ में गुरुदक्षिणा का अर्थ पारितोषिक के रूप में लिया जाता है, किंतु गुरुदक्षिणा का वास्तविक अर्थ कहीं ज्यादा व्यापक है। महज पारितोषिक नहीं।

गुरुदक्षिणा का अर्थ है कि गुरु से प्राप्त की गई शिक्षा एवं ज्ञान का प्रचार-प्रसार व उसका सही उपयोग कर जनकल्याण में लगाएँ। मूलत: गुरुदक्षिणा का अर्थ शिष्य की परीक्षा के संदर्भ में भी लिया जाता है। गुरु दक्षिणा गुरु के प्रति सम्मान व समर्पण भाव है। गुरु के प्रति सही दक्षिणा यही है कि गुरु अब चाहता है कि तुम खुद गुरु बनो।

- कोलंबा कालीधर

अमेरिका से जापान तक क्यों है तपन

चंद्र भूषण

जुलाई का महीना पूरी दुनिया के लिए आफत बना हुआ है। अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका और एशिया के कई इलाकों में गर्मी लगातार नए-नए रिकॉर्ड कायम कर रही है। कुछ जगहों पर सौ साल के और कुछ जगह ऑल-टाइम टेंपरेचर रिकॉर्ड टूट गए हैं। पुरानी दुनिया में जापान और दोनों कोरिया से लेकर स्वीडन, ग्रीस और अल्जीरिया तक और नई दुनिया में कनाडा और अमेरिका के कई इलाकों में हीट वेव से सैकड़ों लोग मारे गए हैं और बड़े-बड़े जंगली इलाकों के जलकर भस्म हो जाने की घटनाएं दर्ज की गई हैं।

दूसरी तरफ भारत के करीब पड़ने वाले कुछ इलाकों में, खासकर दक्षिणी चीन, लाओस, थाईलैंड और कंबोडिया में भयानक बारिश ने तबाही मचा रखी है। इन सभी देशों में बहस चल रही है कि यह हीट वेव और इसी के परिणाम स्वरूप कुछेक इलाकों में जारी प्रलयंकारी बारिश का सिलसिला कब तक चलेगा। यह भी कि इसका संबंध ग्लोबल वार्मिंग से है, या इसे सहज प्राकृतिक चक्र के हिस्से के रूप में लिया जाना चाहिए।

इसका जवाब इस रूप में दिया जा रहा है कि यह साल 'ला नीना' का है, यानी प्रशांत महासागर अपने सामान्य तापमान से ठंडा है। अल नीनो यानी प्रशांत महासागर के गर्म होने का साल आगे आने वाला है। उसके स्पष्ट प्रभाव अगले एक-दो महीनों में दिखने लगेंगे। उसके चलते दुनिया में जो गर्मी बढ़ेगी, सूखे आदि की घटनाएं दर्ज की जाएंगी, उसे जरूर प्राकृतिक चक्र का हिस्सा कहा जाएगा। लेकिन अभी जो हो रहा है, उसे तो कतई नहीं।

वैज्ञानिक पृथ्वी की समूची गोलाई के खासकर उत्तर वाले हिस्से में गर्मी के तांडव को जेट स्ट्रीम के मई से ही एक जगह ठहर जाने का नतीजा मान रहे हैं। जेट स्ट्रीम का नाम आसमान में लगभग छह किलोमीटर ऊपर चलने वाली सर्पाकार तेज हवाओं को दिया गया है, जिनके प्रभाव में नीचे भी हवाओं का संचरण होता है और जून-जुलाई में होने वाली बरसातें दुनिया को राहत देती हुई धीरे-धीरे उत्तरी गोलार्ध को जाड़े की तरफ ले जाती हैं।

लेकिन यह विरला मौका है, जब जेट स्ट्रीम इस कदर खामोश पड़ी है, जैसे उसका कोई अस्तित्व ही न हो। वैज्ञानिक हलकों में इस बात को दर्ज किया जा रहा था, लेकिन जून को गर्मी का स्वाभाविक महीना मानकर आम दायरों में इसका कोई नोटिस नहीं लिया गया। अब जुलाई में हालात बेकाबू होते दिख रहे हैं तो हर जगह जेट स्ट्रीम के ठहराव की ही चर्चा चल रही है, लेकिन इसकी वजहों के बारे में होती है तो होश उड़ जाते हैं।

जेट स्ट्रीम पैदा ही इसलिए होती है कि उत्तर के ध्रुवीय इलाकों से आने वाली ठंडी हवाएं दक्षिण में अफ्रीका से उठने वाली गर्म हवाओं से मई-जून में टकराती हैं। दोनों में तापमान का अंतर जितना ज्यादा होता है, जेट स्ट्रीम उतनी तेज होती है। लेकिन इस बार सुदूर उत्तरी इलाकों का तापमान ही बहुत ज्यादा है। आर्कटिक सर्कल में पड़ने वाले नॉर्वे के इलाकों में एक अर्से से 32.5 डिग्री सेल्सियस का तापमान दर्ज किया जा रहा है, जो उत्तरी भारत में मार्च के महीने में देखा जाता है।

ऐसे में जेट स्ट्रीम बनेगी कहां से और अमेरिका, कनाडा से लेकर ब्रिटेन, स्वीडन, ग्रीस, अल्जीरिया और सुदूर पूरब में जापान और कोरिया तक मौसम खुशगवार होगा तो कैसे ? खुद हमारे यहां भी लोकल बरसातों से ऊपर उठकर चौतरफा सावन आएगा तो कैसे ? आज भी ग्लोबल वार्मिंग के विनाशकारी प्रभावों के बारे में हम ऐसे बात करते हैं, जैसे यह सुदूर भविष्य से जुड़ी कोई आशंका हो। लेकिन इस बार उत्तरी गोलार्ध की गर्मियां हमें बता रही हैं कि हम विनाश के अगल-बगल नहीं, उसके ठीक बीच में बैठे हैं।

अपने लिए नहीं तो अपने बच्चों के लिए पढ़िए

चंद्रग्रहण : आखिर कितनी पीढ़ियों को अंधविश्वास में धकेलेंगे

न ही राहू-केतु का है कोई चक्कर, न किसी राशि-नक्षत्र वाले का होने वाला है कोई भला, ग्रह-नक्षत्रों की अविरल प्रक्रिया का है हिस्सा, अधिक और वैज्ञानिक जानकारी के लिए पढ़िए ये लेख।

दिल्ली में नेहरू प्लैनोटोरियम में हुई चंद्रग्रहण को देखने की भव्य तैयारी, पूरे रातभर कार्यक्रम, नाटक से लेकर चंद्रग्रहण की भ्रांतियों को दूर करने पर कार्यक्रम।

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा चंद्रग्रहण एक खगोलीय घटना है। डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा प्रारंभ में यह माना जा रहा था कि चंद्रग्रहण राहू-केतू के चंद्रमा को निगलने से होता है, जिससे धीरे-धीरे विभिन्न अंधविश्वास व मान्यताएँ जुड़ती चली गईं, लेकिन बाद में विज्ञान ने यह सिद्ध किया कि चंद्रग्रहण पृथ्वी की छाया के कारण होता है।

जब चंद्रमा पृथ्वी की छाया में प्रवेश करता है तब उसका एक किनारा जिस पर छाया पड़ने लगती है, काला होना शुरू हो जाता है जिसे स्पर्श कहते हैं। जब पूरा चंद्रमा छाया में आ जाता है तब पूर्णग्रहण हो जाता है। जब चंद्रमा का पहला किनारा दूसरी ओर छाया से बाहर निकलना शुरू होता है तो ग्रहण छूटना शुरू हो जाता है। जब पूरा चंद्रमा पृथ्वी की छाया से बाहर आ जाता है तो ग्रहण समाप्त हो जाता है जिसे ग्रहण का मोक्ष कहते हैं।

चंद्रग्रहण का कहीं कोई दुष्प्रभाव नहीं है, इसे लेकर तरह-तरह के भ्रम व अंधविश्वास हैं, लेकिन लोगों को इन अंधविश्वासों में नहीं पड़ना चाहिए तथा ग्रहण को सुरक्षित ढंग से देखा जा सकता है तथा वैज्ञानिक इसका अध्ययन भी करते हैं।

भारत के महान खगोलविद् आर्यभट्ट ने आज से करीब 1500 वर्ष पहले 499 ईस्वी में यह सिद्ध कर दिया था कि चन्द्रग्रहण सिर्फ एक खगोलीय घटना है जो कि चन्द्रमा पर पृथ्वी की छाया पडने से होती है। उन्होंने अपने ग्रंथ आर्यभट्टीय के गोलाध्याय में इस बात का वर्णन किया है।

इसके बाद भी चंद्रग्रहण की प्रक्रिया को लेकर विभिन्न भ्रम एवं अंधविश्वास कायम है। डॉ. मिश्र ने कहा एक खगोलीय घटना है। सभी नागरिकों को इसे बिना किसी डर या संशय के देखना चाहिए। चंद्रग्रहण देखना पूर्णत: सुरक्षित है।

डॉ. मिश्र ने कहा जब चंद्रग्रहण होने वाला होता है तब विभिन्न भविष्यवाणियाँ सामने आने लगती हैं जिससे आम लोग संशय में पड़ जाते हैं जबकि चंद्रग्रहण में खाने-पीने, बाहर निकलने की बंदिशों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। ग्रहण से खाद्य वस्तुएँ अशुद्ध नहीं होती तथा उनका सेवन करना उतना ही सुरक्षित है जितना किसी सामान्य दिन या रात में भोजन करना। इस धारणा का भी कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है कि गर्भवती महिला के गर्भ में पल रहे शिशु के लिए चंद्रग्रहण हानिकारक होता है तथा ग्रहण की वजह से स्नान करना कोई जरूरी नहीं है अर्थात् इस प्रकार की आवश्यकता का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है तथा ग्रहण का अलग-अलग व्यक्तियों पर भिन्न प्रभाव पड़ने की मान्यता भी काल्पनिक है। यह सब बातें केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा जारी पुस्तिका में भी दर्शायी गयी है।

27 जुलाई की आधी रात को लगने वाला पूर्ण चंद्रग्रहण 21वीं शताब्दी का सबसे लंबा चंद्रगहण होगा, जो लगभग 103 मिनट तक रहेगा। पिछली सदी में सबसे लंबा पूर्ण चंद्रग्रहण वर्ष 2000 में 16 जुलाई को हुआ था, जो इस बार के पूर्ण चंद्रग्रहण से चार मिनट अधिक लंबा था।

एशिया और अफ्रीका के लोगों को इस बार पूर्ण चंद्रग्रहण का सबसे बेहतर नजारा देखने को मिला। यूरोप, दक्षिण अमेरिका तथा ऑस्ट्रेलिया में यह ग्रहण आंशिक रूप से देखा जा सका। जबकि, उत्तरी अमेरिका और अंटार्कटिका में यह नहीं दिखाई पड़ा। भारत में पूर्ण चंद्रग्रहण 27 जुलाई को रात 22:42:48 बजे शुरू हुआ और 28 जुलाई की सुबह 05:00:05 बजे खत्म हुआ।

इस बार दिल्ली में नेहरू प्लैनोटोरियम में चंद्रग्रहण को देखने की भव्य तैयारी हुई। पूरी रातभर यह कार्यक्रम चला। नाटक से लेकर चंद्रग्रहण की भ्रांतियों को दूर करने पर यह कार्यक्रम आधारित रहा।

सफलता के प्रमुख सिद्धांत

अभिभावक अपने बच्चों के लिए उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं इसलिए वे दिन-रात एक कर देते हैं। वे चाहते हैं कि उनका बच्चा भविष्य में एक सफल व्यक्ति बन कर धनवान बने। लेकिन परेशानी तब आती है जब अनेकों प्रयास करने के बाद भी अभिभावक अपने मन की इच्छा को पूर्ण नहीं कर पाते हैं। इसका कारण है कि सफलता केवल चाहने से नहीं मिलती, सफलता पाने के कुछ सिद्धान्त होते हैं, उन सिद्धान्तों का पालन करना आवश्यक होता है। अभिभावक हो या शिक्षक वे सर्वप्रथम सफलता के सिद्धान्तों को अवश्य जानें तभी बालक को भी सिखा पायेंगे कि सफलता कैसे प्राप्त की जा सकती है।

बच्चों को खुद का ध्यान रखना सिखाएँ - प्राय: बच्चो स्वयं का ध्यान नहीं रखते, वे पोषक भोजन ग्रहण नहीं करते और बीमार पड़ जाते हैं। जिसका व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। वे घर की रोटी-सब्जी के बजाए बाहर का जंक फूड खाना चाहते हैं जो कि अहितकारी होता है। बच्चों को घर के भोजन से प्यार करना सिखाएँ एवं घर के भोजन की उपयोगिता से अवगत करायें। बच्चों को खुद पर विश्वास करने की शिक्षा दें - प्राय: अभिभावक बच्चों का आत्मविश्वास नहीं बढ़ाते बल्कि उनकी कमाजोरियों को दिखाकर उन्हें कमज़ोर कर देते हैं। परिणामस्वरूप बच्चे अपना आत्मविश्वास खो बैठते हैं जो कि उनके लिए बहुत नुकसानदेह है। सर्वप्रथम अपने बच्चो के गुण को पहचानें। उसे स्वाध्याय के माध्यम से गलत-सही की परख करना सिखाएँ।

बच्चों को लक्ष्य बनाना सिखाएँ - अधिकतर हम सभी लक्ष्य से यह अभिप्राय रखते हैं कि परीक्षा के अच्छे अंक पाना ही लक्ष्य होता है जबकि वास्तविकता यह है कि हमारी प्रतिदिन की दिनचर्या में कई ऐसे कार्य हैं जिनको पूरा करना भी हमारा लक्ष्य होता है। छोटे- छोटे लक्ष्यों को पाने के उपरांत बच्चे में बड़े लक्ष्यों को पाने की इ' छा तीव्र हो जाती है और वह अपने शिक्षा संबंधी एवं नौकरी संबंधी लक्ष्यों को पूरी तरह व पूर्ण रूप से प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक सफलता के पीछे सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, अत: अपने बच्चों को सिद्धान्तों को अपनाना सिखाएँ।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन
जीवा पब्लिक स्कूल